अध्याय 47

गोशेन में बसना और जारी रहने वाला अकाल

अपने परिवार से कई वर्षों तक दूर किए जाने के बाद, यूसुफ़ को एक सुखद समाप्ति का आनंद मिला जो केवल परमेश्वर की दैवी योजना द्वारा ही आ सकता था। केवल यूसुफ़ का उसके भाइयों और पिता से पुनर्मिलन ही नहीं कराया गया, परन्तु समस्त परिवार को अकाल के समय मिस्र में आकर बसने का निमंत्रण दिया गया। वहां परमेश्वर उन्हें उस प्रतिज्ञा के अगले पड़ाव के लिए तैयार करने वाला था जो उसने अब्राहम, इसहाक और याकूब को दी थी।

फ़िरौन के समक्ष यूसुफ़ का परिवार और गोशेन में उनका बसना (47:1-12)

[1]तब यूसुफ़ ने फ़िरौन के पास जाकर यह समाचार दिया, "मेरा पिता और मेरे भाई, और उनकी भेड़-बकरियां, गाय-बैल और जो कुछ उनका है, सब कनान देश से आ गया है; और अभी तो वे गोशेन देश में हैं।" [2]फिर उसने अपने भाइयों में से पाँच जन लेकर फ़िरौन के सामने खड़े कर दिए। [3]फ़िरौन ने उसके भाइयों से पूछा, "तुम्हारा उद्यम क्या है?" उन्होंने फ़िरौन से कहा, "तेरे दास चरवाहे हैं, और हमारे पुरखा भी ऐसे ही रहे।" [4]फिर उन्होंने फ़िरौन से कहा, "हम इस देश में परदेशी की भांति रहने के लिए आए हैं; क्योंकि कनान देश में भारी अकाल होने के कारण तेरे दासों को भेड़-बकरियों के लिए चारा न रहा; इसलिए अपने दासों को गोशेन देश में रहने की आज्ञा दे।" [5]तब फ़िरौन ने यूसुफ़ से कहा, "तेरा पिता और तेरे भाई तेरे पास आ गए हैं, [6]और मिस्र देश तेरे सामने पड़ा है; इस देश का जो सबसे अच्छा भाग हो, उसमें अपने पिता और भाइयों को बसा दे, अर्थात् वे गोशेन ही देश में रहें; और यदि तू जानता हो, कि उनमें से परिश्रमी पुरुष हैं, तू उन्हें मेरे पशुओं के अधिकारी ठहरा दे।" [7]तब यूसुफ़ ने अपने पिता याकूब को ले आकर फ़िरौन के सम्मुख खड़ा किया; और याकूब ने फ़िरौन को आशीर्वाद दिया। [8]तब फ़िरौन ने याकूब से पूछा, "तेरी आयु कितने दिन की हुई है?" [9]याकूब ने फ़िरौन से कहा, "मैं एक सौ तीस वर्ष परदेशी होकर अपना जीवन बिता चुका हूँ; मेरे जीवन के दिन थोड़े और दुःख से भरे हुए भी थे, और

मेरे बापदादे परदेशी होकर जितने दिन तक जीवित रहे उतने दिन का मैं अभी नहीं हुआ।" 10और याकूब फ़िरौन को आशीर्वाद देकर उसके सम्मुख से चला गया। 11तब यूसुफ़ ने अपने पिता और भाइयों को बसा दिया, और फ़िरौन की आज्ञा के अनुसार मिस्र देश के अच्छे से अच्छे भाग में, अर्थात् रामसेस नामक प्रदेश में, भूमि देकर उनको सौंप दिया। 12और यूसुफ़ अपने पिता का, और अपने भाइयों का, और पिता के सारे घराने का, एक-एक के बाल बच्चों की गिनती के अनुसार, भोजन दिला दिलाकर उनका पालन-पोषण करने लगा।

आयत 1. 46:31, 32 में उसकी घोषणा के प्रबंध के अनुसार, **यूसुफ़ ने फ़िरौन के पास जाकर** उसे सूचित किया कि उसके **पिता** और **भाई कनान से** मिस्र में उनके **भेड़-बकरियां, गाय-बैलों** और जो कुछ उनका है उसके साथ आ पहुंचे हैं। उसने यहाँ पर यात्रा में उनके साथ आए पत्नियों, बेटियों, पोतों और पोतियों का सीधे तौर पर उल्लेख नहीं किया। **जो कुछ उनका है** वाले वाक्य में उनके भी होने को समझा गया था। यूसुफ़ ने इस बात पर ज़ोर दिया था की वे इस समय **गोशेन देश में हैं** (देखें 45:10; 46:28, 29, 34; 47:4, 6, 27)।

आयत 2. अपने सारे **भाइयों** को अपने साथ **फ़िरौन** के सम्मुख लाने के बजाय, यूसुफ़ ने **पाँच** के समूह को राजा के समक्ष प्रतिनिधि होने के लिए चुना। बाद में यहूदी विद्वानों ने इसका अंदाज़ा लगाया कि यूसुफ़ ने किन पाँच भाइयों को चुना होगा,[1] परन्तु बाइबलीय विवरण हमें इसका कोई उत्तर नहीं देता। अधिक से अधिक, कोई यह अनुमान लगा सकता है कि उसने उन पाँचों को चुना होगा जो उसके परिवार को उचित ढंग से प्रस्तुत कर सकें।

आयत 3. जैसे कि यूसुफ़ ने अपेक्षा की थी (46:33), **फ़िरौन** ने **उसके भाइयों** से यह पूछते हुए शुरुआत की, **"तुम्हारा उद्यम क्या है?"** प्रत्यक्ष रूप से, यह पूछना उचित था किसी भी विदेशियों के समूह से जो मिस्र में बसना चाहता हो। राजा को अपने उत्तर में, उन्होंने उचित आदर और नवा चार दिखाया, **"तेरे दास चरवाहे हैं, और हमारे पुरखा भी ऐसे ही रहे"** (देखें 46:34)।

आयत 4. फिर उन भाइयों ने फ़िरौन को अपना उत्तर देना जारी रखा यह आश्वासन देते हुए कि मिस्र में स्थाई निवासी बनने की उनकी कोई मंशा नहीं है। उन्होंने यह कहते हुए स्वयं को राजा का दया-पात्र बनाया कि वे इस देश में परदेशी[2] की भांति रहने के लिए आए हैं, और उन्होंने इसका कारण भी बताया: **"तेरे दासों को भेड़-बकरियों के लिए चारा न रहा।"** आगे विस्तार पूर्वक बताया कि, कनान में अकाल कितना भारी पड़ा है। बिना उन वादों का वर्णन किए जो राजा ने यूसुफ़ से किए थे (45:17-20), उन्होंने अपने आपको उसकी करुणा और दया-भाव के प्रति सौंप दिया, एक अति-आवश्यक निवेदन के साथ: **"अपने दासों को गोशेन देश में रहने की आज्ञा दे।"**

आयतें 5, 6. फ़िरौन के साथ उन भाइयों की सुनवाई अच्छी रही। उसने यूसुफ़ से कहा, **"तेरा पिता और तेरे भाई तेरे पास आ गए हैं।"** यहाँ पर ज़ोर उस परिवार के यूसुफ़ के साथ संबंध पर दिया गया है। इन वाक्य को उस प्रकार से

समझा जाना चाहिए: "[क्योंकि] तेरा पिता और तेरे भाई तेरे पास आ गए हैं ... ।"[3] उसकी अच्छी सेवा की सराहना में राजा ने कहा, **"मिस्र देश तेरे सामने पड़ा है; इस देश का जो सबसे अच्छा भाग हो, उसमें अपने पिता और भाइयों को बसा दे, अर्थात् वे गोशेन ही देश में रहें।"**

इसके अतिरिक्त, फ़िरौन ने यूसुफ़ के उन भाइयों में गहरी रुचि दिखाई, जो पशुओं की देखभाल करने में निपुण पुरुष थे। उसने यूसुफ़ को निर्देश दिया, **"यदि तू जानता हो, कि उनमें से परिश्रमी पुरुष हैं, तू उन्हें मेरे पशुओं के अधिकारी ठहरा दे।"** जिस इब्रानी शब्द का अनुवाद "परिश्रमी" किया गया है वह है חַיִל *(चायिल)*, और इस सन्दर्भ में, इसका संकेत उनकी ओर है जिनके पास "विशेष योग्यता" (NIV) या "विशेष कौशल" (NLT) होता है। राजा यूसुफ़ के भाइयों से प्रभावित हुआ था और चाहता था कि उनमें से अति प्रतिभाशाली शाही पशु पालक के रूप में सेवा करें। ऐसे पद का वर्णन अकसर मिस्री शिलालेखों पर किया जाता था, क्योंकि फ़िरौनों के पास विशाल झुण्ड और पशु-समूहों का होना कोई असामान्य बात नहीं थी। बाद में अभिलेख बताते हैं कि रामसेस तृतीय के पास 3,264 ऐसे पुरुष थे, जिनमें से अधिकतर विदेशी थे, जिन्हें पशुओं की देखभाल और निगरानी के लिए कार्यरत किया गया था।[4]

आयत 7. उसके भाइयों के फ़िरौन द्वारा अच्छी तरह स्वीकार किए जाने और उन्हें शाही पशु पालक के ओहदे का प्रस्ताव भी दिए जाने के पश्चात, **यूसुफ़ ने अपने पिता याकूब को ले आकर फ़िरौन के सम्मुख खड़ा किया**। शुरुआत में, भाइयों का फ़िरौन से मिलना बड़ा औपचारिक था; क्योंकि उन्होंने दो बार "तेरे दास" (47:3, 4) कहने के द्वारा राजा के प्रति सम्मान दिखाया। परन्तु, वातावरण अधिक प्रेमपूर्ण और शिथिल हो गया जब याकूब सिंहासन के पास आया, और उसने **फ़िरौन को आशीर्वाद** दिया।[5]

प्रथम दृष्टि में, यूसुफ़ के पिता का कृत्य अनुचित दिखाई पड़ता है - शायद उचित आचरण का उल्लंघन भी। इस अवसर पर, एक विदेशी सामान्य व्यक्ति ने, जो कि कमज़ोर और वृद्ध है, प्राचीन निकट-पूर्व के सबसे सामर्थशाली और समृद्ध राजाओं में से एक को आशीर्वाद दिया था। कुलपति के काल में यह सामान्य नहीं था। सामान्य प्रथा का एक उदाहरण इब्रानियों में देखा जा सकता है, जहाँ लेखक ने तर्क-वितर्क किया कि मलिकिसिदक, एक वरिष्ठ राजा/सालेम का याजक, ने एक अब्राहम नामक एक सामान्य पशु पालक को, जो कनान में निवासी परदेशी था, आशीर्वाद दिया (इब्रा. 11:9, 13; देखें उत्पत्ति 14:18-20)। लेखक ने स्पष्ट रूप से यह कहा "इसमें संदेह नहीं कि छोटा [अब्राहम] बड़े [मलिकिसिदक] से आशीष पाता है" (इब्रा. 7:7)। यहाँ, फ़िरौन ने विनम्रता से याकूब के आशीर्वाद को ग्रहण किया था, और इसके लिए उसके दो कारण होंगे। प्रथम, उसने यूसुफ़ के पिता की लम्बी आयु का सम्मान किया होगा। उसी प्रकार से, याकूब ने राजा के लिए लम्बी आयु की प्रार्थना की होगी, जैसा कि प्राचीन काल में प्रथा थी (2 शमूएल 16:16; 1 राजा 1:31; दानिय्येल 2:4; 5:10; 6:6)।[6] दूसरा, और अधिक महत्वपूर्ण कारण, फ़िरौन, यूसुफ़ की सलाह को इस हद तक मानता और

उसपर भरोसा करता था, कि उसे उसके वृद्ध पिता से आशीर्वाद पाकर सम्मानित महसूस हुआ होगा (देखें 45:8)।

आयत 8. इस आशीर्वाद को पाने के बाद, **फ़िरौन** ने **याकूब** से पूछा, **"तेरी आयु कितने दिन की हुई है?"** राजा ने यह प्रश्न शायद इसलिए पूछा क्योंकि प्राचीन निकट-पूर्वी संस्कृति में लम्बी आयु को बड़ा महत्व दिया जाता था। याकूब जैसे व्यक्ति को, जिसने लम्बा जीवन जिया हो और जिसके बहुत सारे बच्चे हों, बुद्धिमान और परमेश्वर द्वारा प्रचुरता से आशीषित माना जाता था (लैव्य. 19:32; अय्यूब 12:12; भजन 128:5, 6; नीति. 17:6)। यह विशेष कर तब और भी सच होता जब उसका बेटा यूसुफ़ जैसा हो, जो बुद्धिमान था जैसे कि उसने स्वप्नों का अनुवाद करने की अपनी योग्यता के लिए परमेश्वर को ज़िम्मेदार ठहराया था (41:16, 25, 38, 39, देखें भजन 105:17-22)।

आयतें 9, 10. राजा को याकूब का वह उत्तर यह सूचित करता था कि उसे परमेश्वर द्वारा लम्बे समय का **परदेशी** जीवन प्राप्त हुआ, जो कि **एक सौ तीस वर्ष** का था।[7] एक प्राचीन मिस्र अभिलेख यह सुझाव देता है कि 110 वर्ष की आयु तक पहुंचना एक आदर्श बात होती थी,[8] और बाद में इसी उम्र में यूसुफ़ की मृत्यु हुई (50:22, 26)। हालाँकि याकूब उस संख्या से कई आगे निकल चुका था, उसने यह माना कि उसका जीवन कठिन और **दुखों से भरा** रहा है।

उदाहरण के लिए, इसहाक से छल करने के बाद, याकूब को कनान से इस डर से भागना पड़ा कि उसका भाई उसकी हत्या कर देगा (27:41-28:5)। उसके पश्चात, उसका लाबान के लिए बीस वर्ष एक चरवाहे के रूप में काम करना कठिन और थकान से भरा साबित हुआ था (31:38-42)। याकूब का जीवन तनाव और प्रतिस्पर्धा से ग्रस्त था क्योंकि उससे छल करके उसका विवाह दो बहनों से कराया गया। यह स्थिति आगे, बच्चे जनने की प्रतियोगिता के कारण और भी उलझ गई थी, जिसमें उनकी दासियों को उसकी रखैल पत्नियों के रूप में दिया गया (29:31-30:24)। जब वह परिवार कनान को लौटा, याकूब की इकलौती बेटी के साथ बलात्कार हुआ। इस घोर अन्याय के प्रति, याकूब के बेटों ने शकेम से बदला लिया, जिसके परिणाम स्वरूप उस कुलपति को कनानी प्रतिघात का भय सताने लगा (34:1-31)। जैसे वह परिवार वहां से आगे बढ़ा, उसकी चहेती पत्नी, राहेल की बच्चे को जन्म देते हुए मृत्यु हो गई (35:16-20)। बाद में, याकूब को यह विश्वास करने पर विवश किया गया कि उसका लाड़ला बेटा, यूसुफ़, जंगली जानवर द्वारा मारा गया (37:31-35)। हाल ही के वर्षों में, उसके परिवार ने कनान में तीव्र अकाल में गुज़ारा करने का संघर्ष किया था (41:1, 2; 43:1, 2)। वास्तव में, उसका जीवन भारी कष्टों से भरा था!

इसके अतिरिक्त, याकूब ने यह कहा कि उसके **जीवन के दिन** थोड़े हैं, उनके मुकाबले जो उसके **बाप-दादों** ने परदेशी होकर बिताए थे। अब्राहम 175 वर्षों तक जिया था (25:7) और इसहाक 180 तक पहुंचा था (35:28)। ये शब्द बोलने के बाद, **याकूब ने दोबारा** (देखें 47:7) **फ़िरौन को आशीर्वाद दिया** और **उसके सम्मुख से चला गया**।

आयत 11. फ़िरौन के आदेश के अनुसार, **यूसुफ़ ने अपने पिता और भाइयों को बसा दिया** उन्हें **मिस्र देश** में **भूमि** सौंपते हुए। इब्रानी के जिस शब्द का अनुवाद "भूमि" (אֲחֻזָּה, *अ'चुज़्ज़ा)* किया गया है वह "संपत्ति"[9] का संकेत देता है। जिसका अर्थ है यूसुफ़ अपने भाइयों के मौलिक अनुरोध, अकाल के शेष वर्षों में मिस्र में "परदेशी की भांति रहने" (47:4), से आगे गया था। वे इब्रानी अब ज़मींदार बन जाएंगे, और केवल निवासी परदेशी नहीं रहेंगे, जैसा कि वे कनान में थे।

उन्हें मिलने वाली संपत्ति का वर्णन **अच्छे से अच्छे भाग**, अर्थात् **रामसेस नामक प्रदेश** के रूप में किया गया है। बिलकुल, इसका अर्थ यह नहीं है कि यह नील के किनारे अच्छी तरह पानी से सींची भूमि थी, क्योंकि वह भूमि तो मिस्री लोगों के कब्ज़े में थी। मिस्री किसान, इतने सारे विदेशियों के इतनी बड़ी संख्या में झुंडों के साथ उनके आसपास बसने को, खतरे के रूप में देख सकते थे। गोशेन, "रामसेस का प्रदेश" शायद पूर्वी नदी-मुख के किनारे पर स्थित एक खाली क्षेत्र था। हालाँकि वह भूमि खेती करने के लिए उचित नहीं थी, परन्तु निवासियों के पास अपने और अपने पशुओं के लिए अकसर पर्याप्त मात्रा में पानी और झुंडों और पशु-समूहों के लिए चरागाह होते थे।

जहाँ तक हमें जानकारी है, "रामसेस" नाम उस भूमि को 1300 ई.पू. में दिया गया था, उन्नीसवें राज-वंश के फ़िरौनों के सम्मान में। इन शासकों में सबसे महान था रामसेस द्वितीय, जिसने उस क्षेत्र में महान राजधानी पाइ-रामसेस का निर्माण किया था।

जो निर्गमन के लिए बाद वाली तिथि पर ज़ोर देते हैं, वे सोचते हैं की इस्राएलियों ने मिस्र को रामसेस द्वितीय (1290 ई.पू.) के समय में छोड़ा था। इस स्थिति में, मूसा ने "रामसेस का प्रदेश" वाली अभिव्यक्ति का उपयोग पूर्वानुमान करते हुए समकालीन भाषा में किया होगा, उस स्थान का वर्णन करते हुए जहाँ सदियों पहले याकूब का परिवार बस गया था।[10] परन्तु, जो निर्गमन (1445 ई.पू.) के लिए पहले वाली तिथि पर ज़ोर देते हैं, वे दावा करते हैं कि इस नाम का प्रयोग यूसुफ़ के समय में किया जाता होगा।

आयत 12. उनके इस प्रदेश में बसाने का प्रबंध करने के अतिरिक्त, **यूसुफ़ अपने पिता का, और अपने भाइयों का, और पिता के सारे घराने** का एक-एक के **बाल-बच्चों** की गिनती के अनुसार, **भोजन** दिला दिलाकर उनका **पालन-पोषण** करने लगा। यह 45:11 में उसके किए वादे के अनुसार था।

सतत चलने वाला अकाल (47:13-26)

क्योंकि गोशेन मिस्र में एक ऐसा बढ़िया क्षेत्र था जिसमें आबादी कम थी, यूसुफ़ को अपने परिवार की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए कठिनाई नहीं आई। परंतु, देश के उन प्रदेशों में जहाँ मिस्री जनता एकत्रित थी, स्थिति काफ़ी भिन्न थी। उनकी भोजन वस्तुएं समाप्त हो चुकी थीं। इसलिए, वर्णन-करता

विस्तार से उन क़दमों का ब्यौरा देता है जो यूसुफ़ ने मिस्र को भुखमरी से बचाने के लिए उठाए। देश को मुट्ठी भर अनाज से कुछ अधिक चाहिए था; उसे दूरगामी कृषि-सुधार की ज़रूरत थी। वृतांत ज़ोर देता है, मिस्री लोगों के देश और फ़िरौन से संबंध के पुनर्गठन करने के द्वारा उभरे विभिन्न संकटों से निपटने के, यूसुफ़ के प्रशासनिक कौशल पर।

एक मायूस लोग (47:13-19)

[13]उस सारे देश में खाने को कुछ न रहा; क्योंकि अकाल बहुत भारी था, और अकाल के कारण मिस्र और कनान दोनों देश त्रस्त हो गए। [14]और जितना रुपया मिस्र और कनान में था, सबको यूसुफ़ ने उस अन्न के बदले, जो उनके निवासी मोल लेते थे, इकट्ठा करके फ़िरौन के भवन में पहुंचा दिया। [15]जब मिस्र और कानन देश का रुपया समाप्त हो गया, तब सब मिस्री यूसुफ़ के पास आकर कहने लगे, "हमको भोजन वस्तु दे; क्या हम रुपये के न रहने से तेरे रहते हुए मर जाएं?" [16]यूसुफ़ ने कहा, "यदि रुपया न हो तो अपने पशु दे दो, और मैं उनके बदले तुम्हें खाने को दूंगा।" [17]तब वे अपने पशु यूसुफ़ के पास ले आए; और यूसुफ़ उनको घोड़ों, भेड़-बकरियों, गाय-बैलों, और गदहों के बदले खाने को देने लगा: उस वर्ष में वह सब जाति के पशुओं के बदले भोजन देकर उनका पालन-पोषण करता रहा [18]वह वर्ष तो यों कट गया; तब अगले वर्ष में उन्होंने उसके पास आकर कहा, "हम अपने प्रभु से यह बात छिपा न रखेंगे कि हमारा रुपया समाप्त हो गया है, और हमारे सब प्रकार के पशु हमारे प्रभु के पास आ चुके हैं; इसलिए अब हमारे प्रभु के सामने हमारे शरीर और भूमि छोड़कर और कुछ नहीं रहा। [19]हम तेरे देखते क्यों मरें, और हमारी भूमि क्यों उजड़ जाए? हमको और हमारी भूमि को भोजन वस्तु के बदले मोल ले, कि हम अपनी भूमि समेत फ़िरौन के दास हों: और हमको बीज दे कि हम मरने न पाएं, वरन् जीवित रहें, और भूमि न उजड़े।"

आयत 13. जैसे-जैसे सूखा चलता रहा और अनाज के भंडार लुप्त होने लगे, स्थिति और भी गंभीर हो गई। बहुत शीघ्र ही, **उस सारे देश में खाने को कुछ न रहा**, अकाल की तीव्रता के कारण। यह **मिस्र और कनान दोनों** के बारे में सच था। इस छू लेने वाले वर्णन के साथ, लेखक ने देश को एक मानवी रूप दिया, जैसे कि वह एक व्यक्ति है जो बिना किसी आशा के त्रस्त (कष्ट भोगना) हो गया है **अकाल के कारण**।

आयत 14. यूसुफ़ के नेतृत्व में भारी मात्रा में अनाज एकत्र किए जाने कारण मिस्र की स्थिति अभी निराशाजनक नहीं है। जब लोग भोजन के लिए व्यथित थे तो यूसुफ़ ने इसे उनके लिए उपलब्ध कराया **और जितना रुपया मिस्र और कनान देश में था, सब को यूसुफ़ ने उस अन्न की सन्ती जो उनके निवासी मोल लेते थे इकट्ठा करके फ़िरौन के भवन में पहुँचा दिया**। जबकि यूसुफ़ सरकार में महान

राजनैतिक सत्ता के धुरी पर था; फिर भी उसने अपने आपको उन नाशवान समयों में धनाढ्य बनाने का प्रयास नहीं किया; बल्कि उसने विश्वास योग्यता के साथ रुपया इकट्ठा किया और फ़िरौन के घर में पहुँचा दिया। क्योंकि राजा ने पूरे मिस्र में बड़े-बड़े भंडार गृहों का निर्माण करने में बहुत भारी मात्रा में धन व्यय किया था और अब लोग सरकार के भंडारों से अनाज खरीदने में अपना धन व्यय कर रहे थे।

आयत 15. समय बीतने के साथ ही **मिस्र और कनान देश के लोगों का रुपया समाप्त हो गया** और अब वे घोर संकट में थे। तब मिस्री लोग यूसुफ़ के पास भोजन वस्तु के लिए आए। वे पूरी तरह उसके कृपा पर निर्भर थे जब उन्होंने उससे यह विनती की, **"हम को भोजन वस्तु दे, क्या हम रुपये के न रहने से तेरे रहते हुए मर जाएं?"**

आयत 16. क्योंकि उनका रुपया समाप्त हो चुका था तो यूसुफ़ ने उनसे कहा, **"यदि रुपये न हों तो अपने पशु दे दो और मैं उनकी सन्ती तुम्हें खाने को दूँगा।"** इस प्रकार की शर्त कठोर जान पड़ती है; लेकिन इस राष्ट्रीय आपदा के समय, जब लोगों के जीवित रहने का उपाय, हाशिये पर था, तो ऐसे स्थिति में कठोर निर्णय लेना पड़ता है।

आयत 17. इसके जवाब में लोगों ने **अपने पशु यूसुफ़ के पास ले आए;** और यूसुफ़ **उन को घोड़ों,**[11] **भेड़-बकरियों, गाय-बैलों और गदहों की सन्ती खाने को देने लगा।** इसके बदले **वह सब जाति के पशुओं की सन्ती भोजन देकर उनका पालन पोषण करता रहा।**

मूल पाठ का सीधा अर्थ न केवल अजीब सा जान पड़ता है बल्कि यह कई गम्भीर प्रश्न भी खड़े करता है। प्रथम प्रश्न, जब सूखा और अकाल समाप्त हो जाएगा तो लोग बिना जानवरों के अपने खेतों को कैसे जोतेंगे और दूसरे अन्य कार्य कैसे करेंगे जो उनके जीवित रहने के लिए आवश्यक है? दूसरी बात यह है कि जानवर लोगों के लिए दूध और मांस के स्रोत के साथ-साथ लोगों के वस्त्र, जूते और अन्य आवश्यक सामग्री के लिए ऊन तथा चमड़े उपलब्ध कराते हैं। यदि मिस्रियों पर अपने सारे जानवर देने का दबाव डाला जाता है तो यह बात लोगों के आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए निर्बुद्धि तथा क्रूर जान पड़ेगा। तीसरी बात, जब मिस्रियों को यह पता चलेगा कि यूसुफ़ ने अपने विदेशी परिवार को अपने सारे जानवर रखने दिए तो वे अपने वज़ीर से अप्रसन्न होंगे और उसे राजा का कार्य करने में अन्यायी ठहराएंगे।

जबकि कई विद्वान उपरोक्त समस्याओं और उनकी सविस्तार चर्चा करने से बचते हैं तो कुछ निर्णायक रूप से इनका सामना करते हैं। अपने सभी जानवरों को बेचने और उन्हें राजा की राजधानी में रखने के बजाय, मूल पाठ का यह अर्थ निकाला जा सकता है कि यूसुफ़ के संरक्षण में, जो ज़रूरतमंद हैं वे फ़िरौन के पास अपने जानवर बंधक रख सकते हैं और यह सहमति दिखाई कि सूखा समाप्त होने पर वे उन्हें ले लेंगे। परंतु वे उनका प्रयोग अपने परिवार के खुशहाली के लिए कर सकते हैं।[12]

आयत 18. मूल पाठ यह कहकर अवलोकन जारी रखता है कि **वह वर्ष तो यों कट गया**, तब मिस्री लोग अगले वर्ष फिर यूसुफ़ के पास गए। इब्रानी भाषा में यह अक्षरशः "दूसरे वर्ष" करके लिखा गया है लेकिन स्पष्ट नहीं है कि यह किस वर्ष के लिए लिखा गया है। यह अकाल का द्वितीय वर्ष नहीं हो सकता है क्योंकि अब तक याकूब और उसका परिवार मिस्र नहीं आया था। वे तो अकाल के तीसरे वर्ष में ही आए होंगे (41:54-42:3; 43:1, 2, 15; 45:21-25; 46:1-7)। मूल पाठ यह भी नहीं बताता है कि उनके आने के बाद कितना समय बीत गया था। न ही हमें यह पता है कि मिस्री लोगों का भोजन और रुपया समाप्त होने में कितने वर्ष लग गए जिससे कि उन्हें अपने पशु फ़िरौन को बेचने (संभवतः गिरवी रखना) पड़े (47:13-17)।

मूल पाठ ऐसा बताता है कि अगले वर्ष यह घटनाएं होने लगी जब लोग यूसुफ़ के पास दोबारा आए और कहने लगे, **"हम अपने प्रभु से यह बात छिपा न रखेंगे कि हमारा रुपया ख़त्म हो गया है और हमारे सब प्रकार के पशु हमारे प्रभु के पास आ चुके हैं; इसलिए अब हमारे प्रभु के सामने हमारे शरीर और भूमि छोड़कर और कुछ नहीं रहा।"** "शरीर" इब्रानी शब्द גְּוִיָּה *(गेविय्याह)* का बहुवचन अनुवाद है जो कभी-कभी लोथ या मृत शरीर का संदर्भ प्रस्तुत करता है (देखें 1 शमूएल 31:10; नहूम 3:3)। संभवतः इस शब्द के प्रयोग से उनकी हताश अवस्था का विश्लेषण किया गया है।

आयत 19. लोगों ने पूछा, **"हम तेरे देखते क्यों मरें और हमारी भूमि क्यों उजड़ जाए?"** दूसरे शब्दों में कहें तो वे यह कह रहे थे कि यदि वे मर गए तो यूसुफ़ और फ़िरौन को इससे क्या लाभ होगा। इसलिए, उन्होंने यह प्रस्ताव रखा, **"हमको और हमारी भूमि को भोजन वस्तु की सन्ती मोल ले कि हम अपनी भूमि समेत फ़िरौन के दास हों: और हम को बीज दे कि हम मरने न पाएं, वरन जीवित रहें और भूमि न उजड़े।"** यह मिस्री लोगों की सबसे दयनीय अवस्था थी वे जीवित रहने के लिए अपने आपको और भूमि को फ़िरौन को दे देना चाहते थे, वे दास बनकर रहने के लिए तैयार थे। "बीज" के लिए उनका निवेदन यह दर्शाता है कि सूखा समाप्त हो चुका था और फसल उगाने की आशा अब जग गई थी।

यूसुफ़ ने शासकीय कर की शुरूआत की (47:20-26)

[20]तब यूसुफ़ ने मिस्र की सारी भूमि को फ़िरौन के लिए मोल लिया; क्योंकि उस कठिन अकाल के पड़ने से मिस्रियों को अपना-अपना खेत बेच डालना पड़ा: इस प्रकार सारी भूमि फ़िरौन की हो गई। [21]और एक छोर से ले कर दूसरे छोर तक सारे मिस्र देश में जो प्रजा रहती थी, उसको उसने नगरों में लाकर बसा दिया। [22]पर याजकों की भूमि तो उसने न मोल ली: क्योंकि याजकों के लिए फ़िरौन की ओर से नित्य भोजन का बन्दोबस्त था और नित्य जो भोजन फ़िरौन उन को देता था वही वे खाते थे; इस कारण उन को अपनी भूमि बेचनी न पड़ी। [23]तब यूसुफ़ ने प्रजा के लोगों से कहा, सुनो, मैं ने आज के दिन तुम को और

तुम्हारी भूमि को भी फ़िरौन के लिए मोल लिया है; देखो, तुम्हारे लिए यहां बीज है, इसे भूमि में बोओ। 24और जो कुछ उपजे उसका पंचमांश फ़िरौन को देना, बाकी चार अंश तुम्हारे रहेंगे, कि तुम उसे अपने खेतों में बोओ और अपने-अपने बाल बच्चों और घर के और लोगों समेत खाया करो। 25उन्होंने कहा, तू ने हम को बचा लिया है: हमारे प्रभु के अनुग्रह की दृष्टि हम पर बनी रहे और हम फ़िरौन के दास हो कर रहेंगे। 26सो यूसुफ़ ने मिस्र की भूमि के विषय में ऐसा नियम ठहराया, जो आज के दिन तक चला आता है, कि पंचमांश फ़िरौन को मिला करे; केवल याजकों ही की भूमि फ़िरौन की नहीं हुई।

आयतें 20-22. यह वचन लोगों का **यूसुफ़** को दिए गए प्रस्ताव का सारांश है। उसने **मिस्र की सारी भूमि को फ़िरौन के लिए मोल लिया** क्योंकि **हरेक मिस्री अपने खेत** बेचने के लिए व्याकुल था क्योंकि **कठिन अकाल** था। परिणामस्वरूप, **भूमि फ़िरौन की हुई** (47:20)। अगला वक्तव्य यह बताता है कि यूसुफ़ का राजा के लिए मिस्र की भूमि खरीदने के बाद कैसी स्थिति हुई NASB अनुवाद के अनुसार, उसने मिस्री लोगों को **नगर के एक छोर से हटाकर दूसरे छोर में** स्थापित किया (47:21; 47:23, 24 की टिप्पणी देखें)। दूसरी तरफ़ **याजक** लोग, यूसुफ़ के निर्णय से प्रभावित नहीं हुए; क्योंकि उनके लिए **फ़िरौन की ओर से भोजन की व्यवस्था** होने के कारण उसने **उनकी भूमि नहीं खरीदी** (47:22)। इसलिए, इस विशेष व्यवस्था के कारण वे **जीवित रहे** और उन्हें जबरन **अपनी भूमि को नहीं बेचना पड़ा**।[13]

आयतें 23, 24. इब्रानी मूल पाठ 47:21 में यह लिखा हुआ है कि जब यूसुफ़ ने मिस्रियों की भूमि को खरीद लिया तो उसने उन लोगों को उनके नगरों से हटाकर दूसरे किनारे स्थित नगरों में बसा दिया। ऐसा लगता है कि यह 47:23 के वाक्यांश का विरोधाभास है जो यह बताता है कि **यूसुफ़** ने लोगों को **बोने के लिए बीज** दिए और उन्हें यह निर्देशित किया कि वे जोते और बोएं। कटनी के समय **पंचमांश** उन्हें फ़िरौन को देना था परंतु बाकी चार अंश उनके रहेंगे, कि वे अपने **खेतों में बोएं** और **अपने-अपने बाल बच्चों और घर के अन्य लोगों समेत खाया करें**।

फ़िरौन के लिए भूमि खरीदकर यूसुफ़ ने उसका क्या किया? क्या उसने सभी लोगों को उनके स्थानों से हटाकर नगरों में बसा दिया (47:21)? यदि ऐसा हुआ तो उसने उन्हें खेती-बाड़ी करने के लिए बीज क्यों दिए जिससे वे अपने परिवार वालों के लिए भोजन उपलब्ध करा सकें? व्यवस्था के अनुसार *मेसोरिटिक टेक्स्ट* अन्य प्राचीन अनुवादों से अधिक विश्लेषण प्रस्तुत करता है; लेकिन 47:21 से ऐसा कुछ भी नहीं पता चलता। मेसोरिटिक टेक्स्ट के बजाय NIV इस आयत का विश्लेषण सामारिटन टेक्स्ट और LXX में प्रस्तुत करता है। ये प्राचीन लेख लोगों को दूसरे नगरों में भेजने के बारे में कुछ भी नहीं बताता है। इसके विपरीत ये अनुवाद यह कहते हैं कि "यूसुफ़ ने लोगों को मिस्र के एक छोर से लेकर दूसरे छोर तक सेवक बनाया।"[14] परिणामस्वरूप, मिस्री लोग किराए के किसान बन

गए जो फ़िरौन के देश में रहते थे। उन्हें उनके उपज के बीस फीसदी हिस्सा फ़िरौन को देना था जबकि अस्सी फ़ीसदी उपज अपने भरण पोषण के लिए रखना था।

आयत 25. यदि यूसुफ़ ने सभी लोगों को नगरों में पहुँचाया होता तो वे बेघर भिखारी के समान होते और तब वे यह कहकर उसकी तारीफ़ नहीं करते, **तू ने हम को बचा लिया है** और अपने आपको फ़िरौन का सेवक नहीं कहते। किसने कभी ऐसा सुना है कि लोगों को जब राजा का दास बनाया गया तो वे आनंदित हुए? इस प्रकार का प्रतिक्रिया दासता की इतिहास में नहीं देखा गया है और कुछ लेखक, इस विषय को लेकर यूसुफ़ के बारे में नकारात्मक विचारधारा रखते हैं कि उसने अकाल के समय मिस्र के लोगों के साथ कैसा बुरा व्यवहार किया। उसके बर्ताव के प्रति उस पर पाखण्डी होने का आरोप लगाया गया है। सर्वप्रथम, उसने फ़िरौन से मिलकर अपने परिवार के लोगों के लिए कुछ उत्तम भूमि, सभी सुविधाएं, जानवरों को रखने की अनुमति और वे मिस्र में स्वतंत्र नागरिक होने की व्यवस्था की। द्वितीय, उसने मिस्र के लोगों से भोजन के बदले उनके सभी रुपया रख लिया और जब उनका सभी रुपया समाप्त हो गया तो उसने उनके सभी जानवर रख लिए। अंत में, उसने उनकी ज़मीन भी ले ली और उन्हें दास बना लिया और उनके स्वतंत्रता को समाप्त कर दिया।[15]

दास प्रथा, प्राचीन बाइबल के संसार में दुर्दशा में पड़े देनदारों की सहायता करने की मान्यता प्राप्त प्रथा थी। यदि वे दयालु स्वामी के मेहनती और ईमानदार दास होते तो उनका जीवन भला तथा आरामदायक होता था। यूसुफ़ का जीवन भी अपने स्वामी पोतीपर के पत्नी के द्वारा झूठा आरोप लगाए जाने के पूर्व ऐसा ही था (39:1-5)। ऐसा जान पड़ता है कि अब्राहम के घर में पैदा हुए 318 लोगों के साथ उसका अच्छा संबंध था (14:14) और विशेषकर उस दास[16] से जो इसहाक के लिए पत्नी ढूंढने के लिए हारान भेजा गया था (24:1-67)। कालांतर में मूसा की व्यवस्था में यह प्रावधान रखा गया कि एक व्यक्ति अपना क़र्ज़ चुकाने के लिए छः वर्ष के लिए अपने आपको बेच सकता था। एक अस्थाई दास स्वतंत्र होने के बजाय अपने आपको स्थाई दास होने के लिए बेच सकता था। इस प्रकार की व्यवस्था से स्वतंत्र व्यक्ति की तुलना में किसी भी व्यक्ति की आर्थिक सुरक्षा, अपने और अपने परिवार के प्रति दृढ़ हो जाती थी (निर्गमन 21:1-6; व्यव. 15:12-17)।[17]

आयत 26. यूसुफ़ के अधीन मिस्रियों को दास बनाए जाने के बाद भी खेती करने की अनुमति दी गई और अपने उपज के 80 फ़ीसदी अनाज अपने पास रखने की भी अनुमति दी गई। यह इस्राएलियों का मिस्र से निर्गमन पूर्व जो अनुचित दासत्व का अनुभव करना पड़ा था उसके तुलना में कुछ भी नहीं था। इन लोगों ने यूसुफ़ को अपने हितैषी उद्धारक के रूप में पाया। इसलिए, यूसुफ़ ने उदार नियम बनाया जो पूरे मिस्र में लागू हुआ। कथा वाचक के अनुसार, यह **नियम आज तक लागू है**। इस प्रकार के वाक्यांश का यह तात्पर्य है कि यूसुफ़ का बनाया नियम कि **पंचमांश फ़िरौन को देना** एक लंबे अवधि तक जारी रहा।

केवल याजकों के भूमि को इस नियम के बाहर रखा गया जो फ़िरौन का नहीं हुआ।

याकूब का मकपेला के गुफ़ा में गाड़े जाने की विनती (47:27-31)

[27]और इस्राएली मिस्र के गोशेन देश में रहने लगे और वहाँ की भूमि को अपने वश में कर लिया और फूले-फले और अत्यन्त बढ़ गए। [28]मिस्र देश में याकूब सत्रह वर्ष जीवित रहा: इस प्रकार याकूब की सारी आयु एक सौ सैंतालीस वर्ष की हुई। [29]जब इस्राएल के मरने का दिन निकट आ गया, तब उसने अपने पुत्र यूसुफ़ को बुलवाकर कहा, यदि तेरा अनुग्रह मुझ पर हो, तो अपना हाथ मेरी जांघ के तले रखकर शपथ खा कि मैं तेरे साथ कृपा और सच्चाई का यह काम करूंगा कि तुझे मिस्र में मिट्टी न दूँगा। [30]जब तू अपने बाप दादों के संग सो जाएगा, तब मैं तुझे मिस्र से उठा ले जा कर उन्हीं के कब्रिस्तान में रखूँगा; तब यूसुफ़ ने कहा, मैं तेरे वचन के अनुसार करूँगा। [31]फिर उसने कहा, मुझ से शपथ खा: सो उसने उससे शपथ खाई। तब इस्राएल ने खाट के सिरहाने की ओर सिर झुकाया।

आयत 27. यहाँ कथा वाचक ने अपने कथा में इस्राएल का मिस्र प्रवास, विशेषकर, गोशेन प्रवास से संबंधित दो सारांश वाक्य जोड़ा। मिस्रियों के विपरीत, जो फ़िरौन की भूमि पर किसान बने, इस्राएलियों ने विदेशी होने पर भी **वहाँ की भूमि को अपने वश में कर लिया; वे फूले फले और अत्यंत बढ़ गए।** बाद का यह वाक्यांश स्पष्ट रूप से याकूब के सत्तर लोगों के मिस्र प्रवास के कई वर्षों बाद लिखा गया होगा (46:27) जो परमेश्वर की प्रतिज्ञा के अनुसार (12:2; 17:4-8; 28:3, 4, 14; 35:11) अब एक राष्ट्र बन गए थे (निर्गमन 1:7, 20; 12:40)। झगड़े, ईर्ष्या, पाप और अपराध के बावजूद, अपनी प्रतिज्ञा को पूरा करने के लिए, परमेश्वर धीरज के साथ उनके साथ कार्य करता रहा कि संसार के सभी कुल उनके द्वारा आशीष प्राप्त करेंगे (12:3)।

आयत 28. इस आयत में संदर्भ बदल जाता है। लेखक, याकूब के आयु को लेकर एक और सारांश वाक्य के साथ आगे बढ़ जाता है **मिस्र देश में याकूब सत्रह वर्ष जीवित रहा: इस प्रकार याकूब की सारी आयु एक सौ सैंतालीस वर्ष की हुई।** हम यह विश्वास करते हैं कि अंततः कई वर्षों के संघर्ष और निराशा के बाद, याकूब का अब अपने आपमें, अपने परिवार और परमेश्वर के साथ मेल-मिलाप हो गया था। लेकिन कथा वाचक ने याकूब के पिछले सत्रह वर्षों के घटनाओं को छोड़ दिया है। यह उसने ठीक उसी प्रकार किया जब कुलपति कनान में थे और यूसुफ़ मिस्र में।

कुछ टीकाकार इसे अटपटा सा पाते हैं क्योंकि याकूब के मृत्यु से पहले ही उसके मृत्यु का वृतांत लिखा गया था (49:33)। यह लेखक का मूल लिखने की कला से हटकर है जैसे कि उसने पहले अब्राहम (25:7, 8) और इसहाक (35:28,

29) के मृत्यु के वृतांत का विवरण प्रस्तुत किया था। यहाँ घटनाओं का क्रम लगभग ठीक जान पड़ता है। अध्याय 47 से ऐसा लगता है कि याकूब का परिवार को मिस्र में कई पीढ़ियों तक रहना पड़ा और यह 15:13 में अब्राहम को दिए परमेश्वर के प्रकाशन के अनुसार है। दूसरी तरफ़, याकूब का व्यक्तिगत पड़ाव उस देश में नहीं है। जिस प्रकार नूह के लिए जहाज़ था उसी प्रकार कुलपति के लिए मिस्र था बाहरी विपत्ति से एक तात्कालिक शरण। यदि याकूब को कब्र की हड्डी से ही प्रतिनिधित्व क्यों न करना पड़े, तब भी वह परमेश्वर के उद्धार के कार्य का भाग बनना चाहता था, जो अब्राहम और उसके संतानों को प्रतिज्ञा की देश में लौटने की प्रतिज्ञा दी गई थी।[18]

आयत 29. जब इस्राएल के मरने का दिन निकट आ गया, तब उसने अपने पुत्र यूसुफ़ को बुलवाया। आमतौर पर जैसे एक पिता साधारण रूप से अपने पुत्र को संबोधित करता है वैसा उसने उसे संबोधित नहीं किया बल्कि अपने वरिष्ठ के रूप में संबोधित किया। उसने यह पहचाना कि उसके परिवार का भविष्य यूसुफ़ के हाथ में है क्योंकि वह अब मिस्र का सामर्थशाली शासक है। उसने नम्र होकर उससे विनती की "**यदि तेरा अनुग्रह मुझ पर हो, तो अपना हाथ मेरी जांघ के तले रखकर शपथ खा, कि मैं तेरे साथ कृपा और सच्चाई का यह काम करूँगा, कि तुझे मिस्र में मिट्टी न दूँगा।**" अब्राहम और उसके सेवक के समान (24:2, 3, 9) इसमें शपथ खाने की पवित्र विधि शामिल थी। इससे पहले कि याकूब की मृत्यु हो जाए वह यह चाहता था कि यूसुफ़ इस बात की शपथ खाए कि वह उसे मिस्र में नहीं गाड़ेगा।

आयत 30. याकूब ने यह भी कहा, **जब मैं अपने बाप दादों के संग सो जाऊँगा, तब तू मुझे मिस्र से उठा ले जा कर उन्हीं के कब्रिस्तान में रखना** - जो मकपेला की गुफ़ा थी (23:19; 25:9, 10; 49:29-32)। यह उसके पिता और दादा, इसहाक और अब्राहम के साथ निकट तम संबंध दर्शाता है। यूसुफ़ ने निम्न प्रतिज्ञा के साथ अपने पिता को उत्तर दिया **मैं तेरे वचन के अनुसार करूँगा।**

आयत 31. याकूब के लिए यह पर्याप्त नहीं था, वह यूसुफ़ से औपचारिक शपथ चाहता था, इसलिए उसने कहा, **मुझ से शपथ खा।** इसके स्वीकृति में, यूसुफ़ ने अपने पिता के जांघ के तले हाथ रखा और **शपथ खाई।**

NASB कहता है, **तब इस्राएल ने खाट के सिरहाने की ओर सिर झुकाकर दंडवत किया।** "दंडवत किया" शब्द NASB के अनुवादकों ने संदर्भ को सारगर्भित बनाने के लिए जोड़ा है। इब्रानी शब्द הִשְׁתַּחֲוָה *(शाहाह)* कभी-कभी किसी को सम्मान देते हुए उनके सम्मुख झुकने के लिए भी प्रयोग किया गया है (23:7; 33:3, 6)। यहाँ इसका यह तात्पर्य हो सकता है कि याकूब, यूसुफ़ के सम्मुख नम्रता पूर्वक झुका होगा जिसको उसने पहले ही अपना वरिष्ठ स्वीकार कर लिया था (47:29)। क्योंकि वही तो एक था जो अपने पिता के अंतिम इच्छा को पूरा करने का अधिकार रखता था। जो लोग इस व्याख्या से सहमत हैं वे इसे यूसुफ़ के दूसरे स्वप्न की पूर्ति के रूप में देखते हैं (37:9, 10) जहाँ उसके पिता को सूर्य का प्रतिनिधित्व करते हुए दर्शाया गया है, जो किसी दिन उसके सम्मुख झुकेगा।

दूसरे शब्दों में *शाहाह* ईश्वर के सम्मुख आराधना में झुकने के लिए भी प्रयोग किया गया है (22:5; 24:26, 48)। संभवतः याकूब ने अपनी अंतिम इच्छा के स्वीकृति के प्रति धन्यवाद स्वरूप परमेश्वर की आराधना की होगी। LXX का अनुमोदन करते हुए इब्रानियों के पत्री के लेखक ने कुलपति के इस व्यवहार को परमेश्वर की आराधना के रूप में समझा। उसने लिखा, "विश्वास ही से याकूब ने मरते समय यूसुफ़ के दोनों पुत्रों में से एक-एक को आशीष दी, और अपनी लाठी के सिरे पर सहारा लेकर दण्डवत किया [προσκυνέω, *प्रोस्कुनेओ]"* (इब्रा. 11:21)।

NASB के अनुसार याकूब ने "खाट के सिरहाने दंडवत किया।" मूल पाठ में NIV के समान इब्रानी व्यंजन מטה *(मटह)* को "खाट" מִטָּה *(मिट्टाह)* या "लाठी" מַטֶּה *(मट्टेह)* भी अनुवाद किया गया है। मेसोरिटिक शास्त्रियों ने ईस्वी सन् 800 ई. में इस इब्रानी शब्द की ओर लोगों का ध्यान आकर्षित किया और उन्होंने इसके लिए "खाट" शब्द प्रयोग किया। जबकि सामरियों की व्यवस्था और LXX (ῥάβδος, *राब्डोस)* में भी "लाठी" शब्द का प्रयोग किया गया है। इब्रानियों 11:21 में यह लिखा हुआ है कि याकूब ने अपने लाठी का सहारा लेकर दंडवत किया, जो LXX के समतुल्य है।

आयत 31 की सटीक समझ होने के बाद भी, यह स्पष्ट है की याकूब को अपने जीवन का अंतिम क्षण शांतिपूर्ण रूप से प्राप्त हो चुका था। उसका परिवार एक बार फिर से इकट्ठा हो चुका था और याकूब को इस बात का आश्वासन था कि जिस परमेश्वर की उसने आराधना की है वह विश्वासयोग्ता के साथ उसके साथ की गई प्रतिज्ञा को पूरा करेगा।

अनुप्रयोग

बुद्धि का मार्ग (47:1-26)

परमेश्वर, पृथ्वी और इसके जानवरों पर मनुष्य के अधिकारों के प्रति सदैव चिंतित रहा है। आदि में, जब परमेश्वर ने मानव जाति (स्त्री और पुरुष) की रचना की तो उसने उन्हें अपने ही स्वरूप में रचा। उसने उन्हें "समुद्र की मछलियों और आकाश के पक्षियों और घरेलू पशुओं और सारी पृथ्वी पर और सब रेंगने वाले जन्तुओं पर जो पृथ्वी पर रेंगते हैं, अधिकार दिया" (1:26)। और उसने उन्हें आशीष दी, और उनसे कहा "फूलो-फलो, और पृथ्वी में भर जाओ, और उसको अपने वश में कर लो"; सृष्टि के वृतांत में यह सुझाव दिया गया है कि यह पेड़ पौधों और जानवरों और "पृथ्वी पर रेंगने वाले सब जन्तुओं" पर अधिकार रखो पर मनुष्य को बुद्धिमानी से अधिकार रखना था (1:28)। फिर भी, परमेश्वर ने प्रथम जोड़े को, मनुष्य या किसी व्यक्ति या समाज पर अधिकार के प्रति किसी विशेष प्रकार का दिशा निर्देश नहीं दिया क्योंकि उस समय कोई भी नहीं था। आदम और हव्वा का प्रथम कार्य यह था कि उन्हें सर्वप्रथम अपने विचारों या कार्यों पर नियंत्रण रखना चाहिए था। तो वे इस कार्य के लिए

आवश्यक बुद्धि कहाँ प्राप्त कर सकते थे?

बुद्धि, जिस परमेश्वर ने हमें बनाया है उससे मिलती है। जिसने हमें अपने स्वरूप में बनाया है, अच्छाई और बुराई की प्राथमिक सच्चाई हमारी हृदय में डाली है (रोमियों 1:18-25)। इसके साथ ही, जब परमेश्वर ने अपनी इच्छा पहले आदम पर और बाद में मूसा और भविष्यवक्ताओं के द्वारा अपने लोगों पर विशेष प्रकाशन के द्वारा प्रकट किया, अब वह मानव जाति तक आया (इब्रा. 1:1, 2)। अंत में जब हम कठिन निर्णय लेने के लिए परमेश्वर की अगुआई प्राप्त करते हैं तो बुद्धि प्रार्थना के उत्तर में मिलता है (याकूब 1:5, 6)।

बुद्धि, परमेश्वर के सच्चाई सीखने पर आधारित है, परंतु यह इस बात पर भी निर्भर है कि जीवन के निर्णायक घड़ी में परमेश्वर के सच्चाई को कैसे पहचानते हैं और उसको कैसे प्रयोग करते हैं। बुद्धि ही मनुष्य को दूसरे प्राणियों से अलग करती है। जानवर, बुरे और भले का ज्ञान प्राप्त किए बिना सहज बोध के आधार पर कार्य करते हैं। मनुष्य, साधारण जानवर नहीं है बल्कि वह नैतिक और आत्मिक प्राणी है। वह जीवन के कठिन प्रश्नों से जूझता है कि उसे क्या कहना चाहिए या फिर उसे कैसे व्यवहार करना चाहिए। जब, विश्वास से, एक मसीही अपना हृदय परमेश्वर के लिए खोलता है और कठिन परिस्थितियों का सामना करने के लिए बुद्धि के लिए प्रार्थना करता है या मुसीबत के समय परमेश्वर की इच्छा को कैसे अनुभव करता है, तो ऐसे स्थिति में परमेश्वर की प्रतिज्ञा यह है कि वह ऐसे प्रार्थना को आशीषित करता है (याकूब 1:5, 6)। इस संदर्भ को, नीतिवचन का लेखक इन पंक्तियों में व्यक्त करता है

> उत्तम युक्ति और खरी बुद्धि मेरी ही है, मैं तो समझ हूँ और पराक्रम भी मेरा है। मेरे ही द्वारा राजा राज्य करते हैं, और अधिकारी धर्म से विचार करते हैं; मेरे ही द्वारा राजा हाकिम और रईस, और पृथ्वी के सब न्यायी शासन करते हैं (नीति. 8:14-16)।

इस पाठ के आधार पर, बुद्धि में "समझ" और "न्यायी शासन" निहित है। यह उस ज्ञान से संबंधित है जो मनुष्य इस संसार में अनुभव के साथ-साथ सीखता है।

हाँ, जब परमेश्वर ने आदम और हव्वा को बनाया और उन्हें अदन की वाटिका में रखा तो वे इस मूल समस्या का सामना कर रहे थे। बौद्धिक रूप से देखा जाए तो वे छोटे बच्चे के समान थे जो भले या बुरे, पीड़ा या मृत्यु के बीच विभेद नहीं कर सकते थे। न ही वे इस बात से तैयार थे कि सर्प, सच्चाई को तोड़ मरोड़कर धोखा धड़ी से उनके सामने रखेगा और उसे उनके सम्मुख सच्चाई की भांति प्रस्तुत करेगा। उनके सामने एक ही मनाही थी भले और बुरे के ज्ञान के वृक्ष से वे न खाएं। यदि वे परमेश्वर के निर्देश को पालन करने में असफल रहते हैं तो वे मर जाएंगे (2:17)। यद्यपि परमेश्वर ने उन्हें बुद्धिमतापूर्ण परामर्श देकर चेताया था, परंतु सर्प की धूर्तता समझने के लिए उन्हें "समझ" (बुद्धि) की घटी होने के कारण परमेश्वर की इच्छा का पालन करने से उसने उन्हें धोखा दिया। सर्प का प्रस्ताव तार्किक लगा; उसने फल के बारे में ऐसा बताया कि "कोई भी

बुद्धिमान हो जाएगा" और जैसे कि आदम और हव्वा "परमेश्वर के तुल्य" हो जाएंगे (3:5, 6)। इस परीक्षा ने उनके घमण्ड को ललकारा; आखिर कौन "परमेश्वर के तुल्य" न होना चाहेगा और "भले और बुरे" के बारे में जानना न चाहेगा? वे इतने समझदार नहीं थे कि परमेश्वर के तुल्य होने के बजाय वे सर्प (शैतान) के मार्ग का पालन करते हुए हृदय वेदना, दुःख और मृत्यु के शिकार होंगे।

यूसुफ़ के कहानी में, बाइबल का वृतांत इस बात का स्पष्टीकरण नहीं करता है कि क्या उसने परमेश्वर से बुद्धि या अगुआई के लिए प्रार्थना किया था जब उसे जबरन मिस्र ले जाया गया और दास होने के लिए बेचा गया था। फिर भी, यदि पाठ को सीधे-सीधे पढ़ा जाए तो हमें पता चलेगा कि उसने ऐसा किया था। शकेम के लोगों के हत्या करने के बाद जब याकूब का दल घोर संकट में फंसा था, तो यूसुफ़ ने अपने पिता को यह कहते हुए सुना था कि परमेश्वर ने उसे बताया है कि वह अपने दल को बेतेल ले जाएं, और उनके आधीन सभी अन्य जातीय देवताओं को वे त्यागें और आराधना करने के लिए वहाँ एक वेदी बनाएं (35:1-8)। यह संभव है कि जब परमेश्वर ने याकूब के साथ वाचा की प्रतिज्ञा का नवीनीकरण किया था तो यूसुफ़ और उसके पिता के अन्य लोगों ने परमेश्वर के वाणी/वचन को सुना होगा। यदि अन्य लोगों ने परमेश्वर के वाणी/वचन को नहीं सुना होगा तो याकूब ने उसके वाणी/वचन को अपने परिवार के सदस्यों एवं उनके दासों के साथ अवश्य बांटा होगा। यह उनको मनाने के लिए अवश्य था ताकि वे जाने कि वे वाचा के लोग हैं जिनको परमेश्वर ने अब्राहम और इसहाक को दिए मूल प्रतिज्ञा के अनुसार भूमि और राजाओं से अति आशीषित करेंगे।

जब यूसुफ़ को उसके भाइयों ने पकड़वाया, उसे उसके पिता से अलग किया और दास के भांति मिस्र में बेच दिया तो निःसंदेह वह टूट गया होगा; परंतु उसने अपने विश्वास को नहीं छोड़ा। परमेश्वर उसके संग था, उसने उसे बुद्धि से आशीषित किया कि वह पोतीपर के घराने और उसके सम्पत्ति का विश्वासयोग्य निरीक्षक ठहरे (39:2-6)। उसने यूसुफ़ को पोतीपर के पत्नी के संग लैंगिक परीक्षा का विरोध करने की बुद्धि दी (39:6-12)। जब यूसुफ़ को बंदीगृह में डाला गया तो परमेश्वर ने उसे राजा के पिलाने हारे और पकाने हारे के स्वप्नों का अनुवाद करने की बुद्धि दी (40:1-23)। उसने फ़िरौन के स्वप्न का भी अर्थ बताया (41:1-36)। तब फ़िरौन ने मिस्र में उसे अपने बाद दूसरा सबसे बड़ा अधिकारी के रूप में ऊँचा किया (41:37-45)। यूसुफ़ ने बुद्धिमानी से जो कुछ वह कर सकता था उसका श्रेय परमेश्वर को दिया (41:16, 25)। अंततः परमेश्वर ने भयंकर अकाल के समय अपने परिवार व मिस्र के लोगों का प्राण बचाने में उसे प्रयोग किया।

क्या यूसुफ़ एक बुद्धिमान शासक था? (47:1-26)

कुछ टीकाकार यूसुफ़ का मिस्र के भयंकर अकाल के समय अपने अधिकार का दुरुपयोग करने के लिए आलोचना करते हैं। उत्पत्ति का वृतांत यह कहता है

कि यूसुफ़, फ़िरौन के बाद मिस्र देश का सबसे बड़ा अधिकारी होने के कारण, उसने मिस्री निवासियों के सारे रुपये अनाज के बदले ले लिया था; उसके बाद उसने उनकी सब चीज़ें जो उनके पास थीं, ज़मीन और जानवरों समेत, ले लिया था। उसने लोगों को भी खरीदा, जो राजा के दास हुए (47:13-26)। कुछ लोगों का उसके प्रति नकारात्मक दृष्टिकोण के विपरीत यूसुफ़ का अकाल के समय मिस्री लोगों को दास बनाना यह दर्शाता है कि वह बुद्धिमान, दयालु और धर्मी शासक था।

उसने अपने परिवार को आवश्यक सामग्री दी। बुद्धिमानी से, यूसुफ़ ने अपने परिवार को अकाल के समय बचाया। यूसुफ़ ने परमेश्वर के बुद्धि के द्वारा (41:34-41) सात वर्ष की सम्पन्नता और सात वर्ष की अकाल के बारे में भविष्यवाणी की और उसने फ़िरौन को इन कठिन वर्षों से निपटने के लिए परामर्श दिया। बाद में कृतज्ञ फ़िरौन ने यूसुफ़ के परिवार को रहने के लिए मिस्र में स्थायी ज़मीन दी।

फ़िरौन ने यूसुफ़ को मिस्र का वजीर बनाया और उसने मिस्र की सारी धन सम्पदा उसके आधीन कर दिया (प्रेरितों. 7:10)। एक जवान दास को किसी राजा द्वारा इस प्रकार का सम्मान दिया जाना प्राचीन काल में किसी ने नहीं सुना था और इसके बाद तो और भी बहुत कुछ होना था। यद्यपि यूसुफ़ एक जवान व्यक्ति था फिर भी उसे "फ़िरौन का पिता सा और उसके सारे घर का स्वामी और सारे मिस्र देश का प्रभु ठहरा दिया गया" (45:8)। इन सब बातों का केवल एक ही संभावित विश्लेषण है फ़िरौन का इस जवान इब्रानी युवक के प्रति सम्मान और उसके बुद्धि के प्रति उसका आदर है। इसीलिए फ़िरौन ने उसे उसके परिवार को मिस्र आने की अनुमति दी ताकि वे अकाल के बचे हुए वर्षों से बच सकें (45:16-20)।

कई वर्षों पूर्व परमेश्वर ने उसके परदादा अब्राहम को यह बता दिया था कि उसके संतान पराये देश में चार सौ वर्षों तक रहेंगे (15:12-16)। जब परमेश्वर ने इस्राएलियों का चौथे पीढ़ी में कनान वापसी के बारे में बोला था तो यूसुफ़ को बंधुआई के बारे में या फिर वह समय काल जिसमें उसके परिवार वाले मिस्र में प्रवास करेंगे, अधिक समझ नहीं आया होगा; परंतु वह यह चाहता था उसके परिवार के लोग एक सुरक्षित व उपजाऊ भूमि में प्रवास करें जब तक कि परमेश्वर उन्हें उनके कुलपतियों के देश में नहीं लौटाता। यह उसके मृत्युशय्या के वचनों से स्पष्ट है जब उसने अपने भाइयों को यह निर्देश दिया कि जब कभी भी निर्गमन होगा तो उन्हें मिस्र से उसके हड्डियों को ले जाकर प्रतिज्ञा की गई देश में गाड़ना होगा (50:24, 25; देखें निर्गमन 13:19; यहोशू 24:32)।

जब यहूदा यह खबर लेकर आया कि याकूब और उसका परिवार मिस्र आ चुका है तो यूसुफ़ ने झट गोशेन की यात्रा करने की योजना बनाई जिससे वह उनसे मिले और उनका स्वागत करे (46:28, 29)। तब उसने बुद्धि का प्रयोग कर अपने पिता के साथ पाँच भाइयों को चुनकर फ़िरौन से मिलने की तैयारी की कि वे उस पर अच्छा प्रभाव डाल सकें (47:1, 2, 7-10)। यूसुफ़ ने अपने बुद्धि का

प्रदर्शन फ़िरौन के सम्मुख राजनैतिक तरीके से नम्र होकर किया। उसी तरह, उसके परिवार के सदस्यों ने भी बुद्धिमानी से फ़िरौन की बड़ाई की व उन्हें मिस्र बुलाने के लिए उसका आभार व्यक्त किया।

जब याकूब को फ़िरौन के सम्मुख लाया गया तो उसने आगे बढ़कर राजा को आशीष दी। यह सामान्य शिष्टाचार के विपरीत था क्योंकि आमतौर पर उच्च पद धारी (या वरिष्ठ) निम्न पद धारी (या छोटे) को आशीर्वाद देता था, जैसे कि यह अब्राहम और मलिकिसिदक के मामले में पाया जाता है (इब्रा. 7:7)। यहाँ परिस्थिति थोड़ी भिन्न है क्योंकि फ़िरौन ने याकूब का सम्मान, एक बुद्धिमान पुत्र के पिता और उसके दीर्घायु (130 वर्ष) के कारण किया था। राजा ने यह विश्वास जताया कि यूसुफ़ का पूरा परिवार का मिस्र आगमन, उसके परिवार तथा मिस्र वासियों के लिए खुशहाली तथा सुख समृद्धि का नया अध्याय होगा। उसने यह विश्वास किया होगा कि यूसुफ़ के बुद्धिमानी पूर्ण मार्गदर्शन के द्वारा उनका उज्ज्वल भविष्य प्रतीक्षा कर रहा है।

स्पष्ट रूप से याकूब इस बात से संघर्ष कर रहा होगा कि क्या वह आजीवन मिस्र में रहेगा व उसकी मृत्यु परदेश में होगी। बूढ़े कुलपति को यह स्मरण करना चाहिए था कि अब्राहम और इसहाक ज़िन्दा रहे और "प्रतिज्ञा की देश में" परदेशी के समान मर गए लेकिन इस ने परमेश्वर की प्रतिज्ञा को रद्द नहीं किया (इब्रा. 11:9)। किसी तरह उन्होंने एक उत्तम देश, "स्वर्ग" की आशा यह विश्वास करते हुए रखी कि "परमेश्वर ने वह उनके लिए तैयार की है" (इब्रा. 11:16)। इसी विश्वास ने उन्हें ज़िन्दा रहने की सामर्थ्य प्रदान की और उन्हें भविष्य की आशा दी यद्यपि "प्रतिज्ञा की वस्तुएं नहीं पाईं" और उनकी मृत्यु मिस्र में हुई (इब्रा. 11:13)। कनान के बाहर मृत्यु होने के कारण, याकूब किसी भी प्रकार से स्वर्गीय आशीषों से वंचित नहीं हुआ; विश्वास से उसने अपने परिवार वालों को आदेश दिया कि वे उसकी हड्डियों को ले जाकर मकपेला की गुफ़ा में उसके पिता और दादा के संग गाड़ें (47:29-31)। यह इस बात का प्रदर्शन था कि वह अपने पुरखाओं के संग उस उत्तम देश की आशा का सहभागी बने, जबकि इस समय उसने उन भविष्य की आशीषों को नहीं समझा।

अपनी संक्षिप्त परिचय देने के बाद, याकूब ने राजा को फिर आशीर्वाद दिया। यह परमेश्वर का उन लोगों से हर पीढ़ी में संबंध रखने का तरीका है जो उसके आत्मिक परिवार के बाहर है। प्रथम सदी के मसीहियों को पतरस का परामर्श हर पीढ़ी के लोगों के लिए प्रासंगिक है जिसमें परमेश्वर के लोग अपने विश्वास और खराई को जीवंत रखने के लिए अविश्वासी तथा दुश्मनी से भरी संसार में लगातार संघर्ष करते रहते हैं। इस अनुभाग की कुंजी 1 पतरस 2:11-17 में पाया जाता है और इसकी अंतिम आयत यूसुफ़ और याकूब का फ़िरौन और उसके लोगों का उनका प्रति दृष्टिकोण स्पष्ट करता है "सब का आदर करो, भाइयों से प्रेम रखो, परमेश्वर से डरो, राजा का सम्मान करो।" यद्यपि फ़िरौन एक अन्य जातीय राजा था फिर भी परमेश्वर ने उसे यूसुफ़, याकूब और पूरे परिवार को आशीष देने तथा सुरक्षित रखने के लिए उसके मन में कार्य किया (नीति. 21:1)।

याकूब का जीवन एक स्थान से दूसरे स्थान पर एक यात्री के समान था। इन वर्षों में उसने कई संघर्ष तथा परीक्षाओं का सामना किया; परंतु वह और उसका परिवार मिस्र में, यूसुफ़ के द्वारा परमेश्वर की प्रतिज्ञा और फ़िरौन की आशीर्वाद के द्वारा फिर से एकत्रित हो गया था जिसके कारण उसका विश्वास पुनर्जीवित हुआ और उसका आशा नवीनीकृत हुआ। उसे इस बात का भी आश्वासन हुआ कि प्रतिज्ञा की देश में अब्राहम और इसहाक से उसका पुनर्मिलन होगा, जहाँ वह भी दफ़नाया जाएगा (50:13)। यह परमेश्वर के लोगों के साथ आज भी ऐसा ही है हमारा जीवन भी इस धरती पर मुसाफिर व यात्री के समान है जिसमें अच्छे तथा बुरे अनुभवों का समावेश है। हम कहाँ जीते हैं या फिर कहाँ गाड़े जाते हैं अधिक महत्वपूर्ण नहीं है क्योंकि हम भी, "पृथ्वी पर परदेशी और बाहरी हैं" (इब्रा. 11:13)। प्रतिज्ञा की गई वास्तविक देश धरती पर की नहीं बल्कि स्वर्गीय है। हमारे इस भरोसे का कारण यह है कि यीशु ने मृत्यु पर विजय प्राप्त कर ली है; उसने हमें कुलपतियों के अनुभवों से उत्तम आशा प्रदान की है।

हमारे अंतिम आशा के बारे में प्रेरित पतरस ने ऐसा कहा है, "एक अविनाशी और निर्मल, और अजर मीरास" (1 पतरस 1:4) उनके लिए है जिन्होंने अपने जीवन को यीशु को समर्पित किया है, जो कभी भी धूमिल नहीं होवेगा। पुराने नियम के संत भी इस स्वर्गीय घर का हिस्सा होवेंगे। यीशु ने कहा, "बहुतेरे पूर्व और पश्चिम से आकर अब्राहम और इसहाक और याकूब के साथ स्वर्ग के राज्य में बैठेंगे" (मत्ती 8:11) और यह मसीह के लहू के कारण है जो सब लोगों को क्षमादान देता है जिन्होंने पुराने या नए वाचा के अंतर्गत उसका अनुकरण किया है। यीशु हमारे लिए "स्थान तैयार" करने स्वर्ग गया है ताकि जहाँ वह है वहाँ "हम भी रहें" (यूहन्ना 14:2, 3)।

उसने मिस्रियों को बचाया। बुद्धि से ही यूसुफ़ ने मिस्र की आर्थिक व्यवस्था का बंदोबस्त किया ताकि वह लोगों को आने वाले गरीबी से बचा सके; फिर भी, ऐसा करने के द्वारा, उसने उन्हें दास बनाया। कई विद्वानों ने यूसुफ़ के कार्य जो 47:13-26 में पाया जाता है, को अनैतिक बताया है। इस अनुच्छेद ने कुछ टीकाकारों को यूसुफ़ को अकाल के समय भोजन वस्तु वितरित करने में, परमेश्वर के बुद्धि के विपरीत और संसार की युक्ति के अनुसार कार्य करने के लिए दोष लगाने का अवसर प्रदान किया है। जैसे ही अकाल ने विकराल रूप धारण किया तो वे यूसुफ़ के दृष्टिकोण तथा चरित्र में बदलाव पाते हैं। इससे पहले वह बुद्धिमान तथा हितकारी शासक था जिसने अपने परिवार के साथ-साथ, परमेश्वर की इच्छा और मिस्री निवासियों की हित के अनुसार कार्य किया। फिर भी, जैसे ही अकाल जारी रहता है तो कुछ आलोचकों ने यूसुफ़ के नैतिकता पर प्रश्न उठाया। इसलिए इन प्रश्नों का उत्तर दिया जाना आवश्यक है।

यूसुफ़ ने मिस्री लोगों को दास बनाया, वह परमेश्वर के दिए गए बुद्धि के अनुसार कार्य करता रहा न कि उस युक्ति के अनुसार जो नीचे (शैतान) से आती है (देखें याकूब 3:15)। उसने वही किया जो मिस्री तथा चुने हुए लोगों को कठिन परिस्थिति में बचाने के लिए करना था।

1. एक टीकाकार के अनुसार गुजरते समय के साथ ही यूसुफ़ ने पाखण्डी का आचरण किया और उसने यह अपने आचरण के द्वारा सिद्ध किया। उसने धीरे-धीरे मिस्र का रुपया, सम्पत्ति, भूमि और स्वतंत्रता छीन लिया। इसका यह तात्पर्य हुआ कि यूसुफ़ ने अपनी नैतिकता खो दी और उसी समय उसने "परमेश्वर तथा धन" दोनों की सेवा करने का प्रयास किया (देखें मत्ती 6:24)। जबकि मिस्री लोगों ने यूसुफ़ को अपना सारा रुपया, सम्पत्ति और भूमि भोजन वस्तु के बदले दिया तो उसने अपने आपको या अपने रिश्तेदारों और अपने परिवार वालों को धनी नहीं बनाया; बल्कि उसने सारा धन फ़िरौन के घर में लाया (47:14)। यह आवश्यक था कि वह देश की भलाई के लिए धन एकत्रित करे। क्योंकि मिस्र के सरकार ने भुखमरी से बचने की तैयारी के लिए मज़दूरों को पैसा देने, सामग्री खरीदने, भंडारगृह बनाने और उन्हें अनाज से भरने के लिए बहुत बड़ा रकम लगाया था। वस्तुतः सरकार के पास अभी भी बहुत बड़ी संख्या में कर्मचारी थे जिनको धन देना था। यह न केवल सरकार को कार्य करने के लिए आवश्यक था बल्कि भंडार गृहों को चोरों से बचाने के लिए, कानून तोड़ने वालों के विरूद्ध न्याय करने के लिए, गृहयुद्ध रोकने के लिए और विदेशी आक्रमणकारी से अनाज के भण्डारों को सुरक्षित रखने के लिए आवश्यक था।

2. यह सत्य है कि यूसुफ़ ने अपने परिवार वालों के भूमि जब्त नहीं किया जबकि मिस्री लोगों का उसने ज़ब्त किया, पचहत्तर लोग मिस्र के जनसंख्या के सम्मुख बहुत थोड़े थे। यह भी कि याकूब और उसके पुत्रों ने मिस्र में स्थाई निवास के लिए निवेदन नहीं किया था; उन्होंने तो केवल गोशेन में कुछ समय के लिए डेरा डालने के लिए निवेदन किया था (47:4)। उनके निवेदन के बाद भी, यूसुफ़ ने फ़िरौन के आशीर्वाद से उन्हें पूर्वी डेल्टा में भूमि दी, जहाँ वे रह सकते थे और अपने भेड़ बकरियों को चरा सकते थे। इस प्रकार का छूट पूर्ववर्ती मिस्र में नहीं था। फ़िरौन ने मंदिर के याजकों को स्थाई कृषि भूमि और रहने के लिए आवास भी दिया जो न तो सरकार द्वारा जब्त किया गया और न ही उसमें कर लगाया जाएगा (47:22)। याकूब के परिवार ने जो छूट प्राप्त किया था वह मंदिर के याजकों और उनके परिवारों को दिए छूट के जैसा ही था।

3. जिन मिस्री लोगों को यूसुफ़ ने दास बनाया उन्होंने उसे कठोर आदमी के रूप में नहीं देखा। इसके विपरीत उन्होंने अकाल से बचाने के लिए उसकी सराहना की "तू ने हम को बचा लिया है: हमारे प्रभु के अनुग्रह की दृष्टि हम पर बनी रहे और हम फ़िरौन के दास हो कर रहेंगे" (47:25)। उस समय के लोगों को जिनको यूसुफ़ ने दास बनाया उनके द्वारा इस प्रकार की प्रतिक्रिया, इक्कीसवीं सदी के लोगों के लिए अविश्वसनीय है, लेकिन प्राचीन संसार में दासता कैसे कार्य करता था, उसके प्रति घृणा दर्शाता है। जिस प्रकार का दासता यूसुफ़ ने मिस्र में प्रारंभ की, वह आज, जैसे लोग समझते हैं, इससे भिन्न था।

जबकि प्राचीन काल के सभी संस्कृति में लोगों ने दासों को उनके स्वामी की सम्पत्ति समझा, लेकिन दासों के स्वामी भी इंसान थे, विशेषकर यूसुफ़ के पूर्वज। दासों के साथ गरिमा से व्यवहार किया जाता था और उनको केवल जानवर या

लैंगिक वस्तु ही नहीं समझा जाता था। कुछ तो परिवार के भरोसेमंद सदस्य समझे जाते थे। उदाहरण के लिए, अब्राहम के यहाँ 318 भरोसेमंद और प्रशिक्षित दास थे जो उसके घर में ही पैदा हुए थे। इसका तात्पर्य यह हुआ कि उनके माता पिता, अब्राहम के परिवार के दास रहे होंगे और इस प्रकार उनके बच्चे भी दासत्व में पैदा हुए। जब कुलपति ने इन लोगों को खतरे की घड़ी में बुलाया तो वे अपने स्वामी के लिए शत्रु के विरूद्ध बहादुरी से लड़े। उन्होंने मेसोपोटामिया के चार बड़े बलशाली राजाओं को न केवल पराजित किया बल्कि उन्होंने लूत, उसके परिवार और यरदन घाटी के अन्य लोगों को भी जो बंदी बनाए गए थे, छुड़ाया (14:14)।

दूसरा उदाहरण अब्राहम का सबसे पुराना दास है, जो उसके पूरे परिवार की रख रखाव करता था। कुलपति ने उस पर इतना भरोसा किया कि उसने दस ऊँटों को सोना, चाँदी, सुंदर वस्त्र और अन्य बहुमूल्य सामानों से लदकर उसे हारान भेजा ताकि वह इसहाक के लिए एक दुल्हन ढूँढ लाए। यह दास अपने स्वामी का आदर करता था और उससे प्रेम करता था और अब्राहम के परमेश्वर का विश्वासी भी बना। उसने स्वर्गदूत के दिशा निर्देशन पर भरोसा किया और जब उसकी भेंट रिबका से हुआ तो उसने उसके प्रति आभार व्यक्त किया। संभवतः इसी बात ने हारान में अब्राहम के संबंधियों को विवश किया होगा कि वे रिबका को इस व्यक्ति के साथ इसहाक का पत्नी होने के लिए कनान भेजे (24:1-67)। एक दास को जिसके स्वामी ने दस ऊँटों पर लदे सोना, चाँदी एवं अन्य बहुमूल्य सामान पर भरोसा किया तो निश्चय ही उस पर यह भी भरोसा किया जा सकता था कि वह रिबका को उसके नए पति, अब्राहम के पुत्र को सौंप देगा।

प्राचीन दक्षिण पूर्व में रखैलों को पत्नी के रूप में रखना दूसरी प्रचलित दास प्रथा थी। लाबान ने अपनी पुत्रियों लिआ और राहेल का जब याकूब से विवाह हुआ तो उसने उन्हें दो जवान रखैल, ज़िल्पा और बिल्हा को विवाह पुरस्कार के रूप में दिया (29:24, 29)। वे याकूब की परोक्ष पत्नियाँ बन गईं क्योंकि लिआ और राहेल में अपने पति के लिए अधिक पुत्र पैदा करने की प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष होड़ लग गई थी (30:1-13)। इन दोनों स्त्रियों को याकूब ने दासी नहीं वरन अपनी पत्नियां गिना; और उनके पुत्र दास नहीं कहलाए बल्कि उसके उत्तराधिकारी ठहरे। वे अपने पिता की आशीष का उत्तराधिकारी बने (49:1-27), और वे इस्राएल के बारह गोत्रों में से चार गोत्रों के प्रमुख बने (49:28)। उनके संतानों को यहोशू के अगुआई में आंशिक रूप से कनान देश में भूमि का हिस्सा मिला जिस पर कालांतर में दाऊद के आधीन पूरी देश पर कब्ज़ा कर लिया गया था।

परिस्थिति के आधार पर, अन्य जातियों के समाज में भी मानवता वादी दास प्रथा देखा जा सकता है और यह बाइबल में वर्णित है। यूसुफ़ को पोतीपर का अनुग्रहकारी व्यवहार मिला - मृत्यु दण्ड के बजाय उसे बंदी बनाया गया - वह भी उस परिस्थिति में जब उस पर उसके स्वामी के पत्नी के साथ बलात्कार जैसे गंभीर आरोप लगे थे (39:6-20)। यदि यह उस देश के कानून से छूट प्राप्त

भी थी तो भी यह इस बात का वर्णन करता है कि सभी अन्य जातीय दासों के स्वामी निर्दयी नहीं होते थे - विशेषकर यूसुफ़ जैसे विश्वासयोग्य दास के लिए।

क्योंकि प्राचीन मूर्तिपूजक समाज में दासत्व में कानून एक समान नहीं था, इसमें कोई हैरानी नहीं होनी चाहिए कि कई तरह से इस्राएली कानून से भिन्न भी थे। इस तथ्य का एक विशेष उदाहरण यह है कि मूसा की व्यवस्था में, कोई व्यक्ति जो अपना ऋण का भुगतान न कर सकता हो वह दासत्व में बेचा जा सकता था। परन्तु उसके कार्य के 6 वर्ष बाद, उसे स्वतन्त्र करना होता था और उसे खाली हाथ नहीं भेजना होता था। उसे अपने स्वामी के पशुओं में से पशु, उसके कुण्ड में दास को दाख मधु और फसल में से उसे अनाज देना होता था ताकि वह स्वतन्त्र मनुष्य के रूप में अपना नया आरम्भ कर सके (व्यव. 15:12-15)। यदि उसके स्वामी ने उसके साथ प्रेम और आदर का व्यवहार किया हो तो वह अपने स्वामी के साथ जीवन भर के लिए रहने का चुनाव कर सकता था (15:16, 17)। परन्तु यदि उसने मुक्त होकर जाने का निर्णय किया हो, तो उसके स्वामी को उसके जाने में असंतोष का अनुभव नहीं करना था। उस स्वामी के लिए परमेश्वर ने विशेष प्रतिज्ञा दी है जो अपने दास को मुक्त करता है।

व्यवस्थाविवरण से दासत्व के सम्बन्ध में यह उदाहरण इस संदर्भ में निश्चय ही रुचिकर है। कुछ बातों में, यूसुफ़ के दासत्व की अवधि को मिस्री लोग इस्राएली व्यवस्था के अनुरूप ही अग्र दूत के रूप में देखते होंगे। मिस्रियों की प्रतिक्रिया के द्वारा सम्भावित लगाव पूरी तरह समझा हुआ दिखाई देता है जब यूसुफ़ को फ़िरौन के पास दास के रूप में बेच दिया गया। निश्चय ही वह इस बात को जानते थे कि उनका उच्चाधिकारी मिस्र में कई वर्षों से दास रहा है, फिर भी उसे बुद्धिमानी से फ़िरौन के सपनों का अर्थ बताने के कारण मुक्त कर दिया गया। वह जानते थे उसे मिस्री अर्थ व्यवस्था पर अधिकारी ठहराया गया है क्योंकि उसका हृदय और उसकी योजना लोगों को बचाने की थी। उनको भूख से बचाने के लिए उसने सात वर्ष खाद्य सामग्री को भंडार में रखा।

ज्यों-ज्यों समय बीतता गया और लोगों ने अपना धन, सम्पत्ति, ज़मीन और स्वतन्त्रता को भोजन सामग्री के बदल फ़िरौन को सौंप दी, ऐसा लगता है कि उनको भरोसा था कि यूसुफ़ अन्ततः उनको वह वापिस दिलवाएगा जो खो गया है। उनकी आशा की पुष्टि शीघ्र ही होने वाली थी; क्योंकि यूसुफ़ ने मिस्री लोगों को अपनी ज़मीन पर कार्य करने की अनुमति दे दी, और उसने उनको नई खेती करने के लिए बीज दिया। उस सर्वोच्च अधिनियम ने लोगों को अच्छे भविष्य की आशा दी जब यूसुफ़ ने यह घोषणा की फसल के समय, उनको अपनी फसल का 20 प्रतिशत भाग फ़िरौन को वापिस करना था और वे फसल का 80 प्रतिशत भाग अपने लिए रख सकते थे। प्राचीन युग में काश्तकारों के लिए यह मात्रा उदारचरित रही, और दासों को इस तरह का अवसर देना कभी सुना नहीं गया था। औसतन, काश्तकारों को अपनी फसल का तीसरा हिस्सा स्वामी को देना होता था[19]; इस तरह से वे अपने लिए दो तिहाई भाग ही रख सकते थे। दास बड़ी मुश्किल से अपने जीवनयापन के लिए और प्रयोग के लिए रख पाते थे। यदि

मिस्र देश के सभी दासों की जनसंख्या को अपनी फसल का 80 प्रतिशत लेने दिया जाए तो अन्ततः उनके पास पर्याप्त धन होगा कि वे फ़िरौन से अपनी जमीनें वापिस ले सकते थे।

यह इस बात को बताता है क्यों लोग, दासत्व में होने के बावजूद भी यूसुफ़ की प्रशंसा करेंगे और कहेंगे, "तू ने मारे प्राणों को बचा लिया है।" (47:25)। आगे चलकर, यूसुफ़ ने मिस्र में एक स्थायी कानून बना दिया कि फ़िरौन अपने लोगों की फसल का मात्र पाँचवाँ भाग (20 प्रतिशत) ही ले और उत्पत्ति के लेखक ने कहा कि पुस्तक के लिखने तक मिस्र देश में यह नियम बना रहा (47:26)।

हालांकि वास्तव में देखा जाए तो मिस्री दास ही थे, प्राचीन युग में उनके साथ काश्तकारों से बढ़कर बेहतर व्यवहार किया गया था। यूसुफ़ के कार्यों ने उनकी गरिमा को बनाए रखा और उन्हें आशा दी, भविष्य में, वे और उनके परिवार फिर मुक्त हो सकेंगे, उनकी अपनी ज़मीन और सम्पत्ति होगी। यूसुफ़ ने मिस्री दासों के पाखण्ड के निम्न स्तर की बुद्धिमता का अनुसरण नहीं किया था, जैसा कि कुछ लोगों ने सुझाव दिया; वास्तव में, वह उस विकराल राष्ट्रीय आपात स्थिति में लोगों पर दया और तरस दर्शाने के द्वारा ईश्वरीय बुद्धि का अनुसरण कर रहा था। वह सच्च में ही ऐसा शासक था जिसे परमेश्वर ने "धर्म से विचार" करने के लिए प्रयोग किया (नीति. 8:15)।

समाप्ति नोट्स

[1]"फिलिस्तीन तर्गम" ने उनके नाम "जबूलून, दान, नप्ताली, गाद और आशेर" दिए हैं (*द तार्गम ऑफ़ ओंकेलोस एंड जोनाथन बने उज़्ज़ीअल ऑन द पेंटाट्युक*, ट्रांस. J. W. एथेरिज [न्यू यॉर्क: KTAV पब्लिशिंग हाउस, 1968], 323)। [2]जिन शब्दों का अनुवाद "परदेशी होकर रहना" (גּוּר, *गुर)* और "अतिथि होकर रहना" (גּוּר, *गेर)* किया गया हैं, उनका उत्पत्ति में अकसर प्रयोग कुलपतियों की जीवनशैली के लिए किया गया है, जिनका पृथ्वी पर कोई स्थाई निवास स्थान नहीं था; वे परदेशी निवासी थे (12:10; 19:9; 20:1; 12:23, 34; 23:4; 26:3; 32:4; 35:27; 47:4, 9)। प्रतिज्ञा के देश में भी, इस्राएलियों के लिए गेर के बहुवचन का उपयोग किया है लैव्यव्यवस्था 25:23 में "परदेशी और बाहरी," या "परदेशी और ... किरायेदार" (NIV)। (देखें इब्रानियों 11:9, 10.) [3]केनेथ ए. मैथ्यु, *जेनेसिस 11:27-50:26*, द न्यू अमेरिकन कमेंटरी, वोल. 1B (नैशविल: ब्रोडमन & होलमन, 2005), 845. [4]नहूम एम्. सरना, *जेनेसिस*, द JPS टोरा कमेंटरी (फ़िलेडैल्फ़िया: जुइश पब्लिकेशन सोसाइटी, 1989), 319. [5]याकूब द्वारा दी गई विभिन्न आशीषें उत्पत्ति के अंतिम अध्यायों में पाई जाती हैं। उस कुलपति ने फ़िरौन को (47:7, 10), यूसुफ़ को (48:15; 49:26), मनश्शे और एप्रैम को (48:9, 16, 20), और अपने बारह पुत्रों को (49:28) आशीषें दी। [6]विक्टर पी. हैमिलटन, *द बुक ऑफ़ जेनेसिस: चैप्टर 18-50*, द न्यू इंटरनेशनल कमेंटरी ऑन द ओल्ड टेस्टमेंट (ग्रैंड रैपिड्स, मीच.: अड्र्समन्स पब्लिशिंग कंपनी, 1995), 611. [7]याकूब 147 वर्ष की आयु तक जीवित रहने वाला था (47:28)। [8]जॉन ए. विल्सन, ट्रांस., "द इंस्ट्रक्शन ऑफ़ द विज़ीअर साह-होतेप," इन *एन्शंट नियर इस्टर्न टेक्स्ट्स रेलेटिंग टू दी ओल्ड टेस्टमेंट*, तीसरा संस्करण, जेम्स बी. प्रिच्चर्ड (प्रिंसटन, एन.जे.: प्रिंसटन यूनिवर्सिटी प्रेस, 1969), 414 (नंबर 640)। [9]हर्बर्ट वुल्फ, "אָתָה," *TWOT* में 1:32-33. [10]"रामसेस" नाम उन नगरों में से एक पर भी लागू होता है जो इस्रालियों ने बनाए थे, जिसमें से वे बाद में निर्गमन (निकास) किया (निर्गमन 1:11; 12:37; गिनती 33:3, 5)।

[11]बाइबल में यहाँ पहली बार घोड़ों का संदर्भ दिया गया है। भूगर्भवेत्ताओं के अनुसार अकसर कहा जाता है कि हिक्सॉस लोगों ने घोड़ों का उपयोग किया और मिस्र में युद्ध के रथों में स्थानीय मिस्रियों के साथ युद्ध करते समय जब उन्होंने उन्हें हराया था प्रयोग किया (1720-1580 ई.पू.)। (देखें जॉन टी. विलिस, *जेनेसिस*, द लिविंग वर्ड कमेंट्री [आस्टीन, टेक्सासः स्वीट पब्लिशिंग कम्पनी, 1979], 437.) [12]पूर्वोक्त। [13]इसके विपरीत लेवी और याजकों का भरण पोषण इस्राएल के लोगों के दशवांश से हुआ (गिनती 18:21-32; व्यव. 18:1-8)। लंबी चौड़ी भूमि के बजाय उन्हें याजकों का नगर और उसके चारों ओर की चराईयां भी दी गई (गिनती 35:1-8; यहोशू 21:1-42)। [14]एमटी यह कहता है कि "उसने लोगों को एक नगर से दूसरे नगर में बसाया" הֶעֱבִיר אֹתוֹ לְאָרִים *(हेएबिर ओथो लेअरिम)*, जबकि सामारितटन पेंटाट्यूक यह कहता है कि "उसने लोगों को सेवक बनाया" הֶעֱבִיד אֹתוֹ לַעֲבָדִים *(हेएबिद ओथो लाअबदिम)*। [15]वाल्टर ब्रूग्मैन, *जेनेसिस*, इंटरप्रिटेशन (एटलांटाः जॉन नॉक्स प्रेस, 1982), 356-57. [16]इब्रानी शब्द עֶבֶד *(ऐबेद)* प्रयोग किया गया है, जिसका तात्पर्य सेवक या दास है। [17]गॉर्डन जे. वेनहैम, *जेनेसिस 16-50*, वर्ड बिब्लिकल कमेंट्री, वोल्यूम 2 (डालसः वर्ड बुक्स, 1994), 449. [18]हैमिल्टन, 625. [19]ब्रूस के. वाल्के, *जेनेसिसः ऐ कमैंट्री* (गैंड रेपिडस, मिश.: ज़ोंडरवेन पबलिशर्स, 2001), 591.